चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.5.21	2	7-8

डॉ. रामधन सिंह की बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत सबसे बड़ा निर्यातकः वीसी

कृषि वैज्ञानिक स्व. डॉ. रामधन सिंह की याद में एचएयू में कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़| हिसार

स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गईं। वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर.काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की

स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते वीसी व अन्य।

बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रेजंटेटिव व बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि देशी गेहूं की किस्म जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, सी-306 के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	28.5.21	9	4-8

आयोजन

वीसी बोले, महान वैज्ञानिक ने हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में पहचान दिलाई

हकृवि कुलपति बीआर काम्बोज ने ऑनलाइन माध्यम कार्यक्रम में दी जानकारी

खाद्यान्न उत्पादन में डॉ. रामधन सिंह का योगदान अतुलनीय : काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह को बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां हासिल हुई वह रामधन सिंह के स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण संभव हो सका है। यह बात हकृवि कुलपति बीआर काम्बोज ने ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नही दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में ईजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी अनेक उपलब्धियां हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन ने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनसे भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ें

काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। उनकी याद में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़कर उनकी देखभाल करें और उनमें बदलते मौसम व जलवायु के अनुसार आने वाले हर बदलाव का बारीकी से अध्ययन कर नई किस्मों को ईजाद करें।

दुनिया भर में अलग पहचान : डॉ. जोशी

कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रेजेंटेटिव व बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने बताया कि देशी गेहूं की किस्म जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, सी-306 के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं। इसके अलावा संसार में मशहूर बासमती चावल 370 और झोना- 349 भी उनकी देन है। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह की दुनियाभर में बेहतरीन विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करने वाले वैज्ञानिक के रूप में अलग पहचान है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि वे 20 अप्रैल 1977 को इस संसार को अलविदा कह गए लेकिन सबको जिंदा रहने के लिए अथाह अनाज भंडार दे गए। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह कृषि अनुसंधान एवं विकास की कई समितियों के सदस्य रहे। वह विश्वविद्यालय प्रबंधक बोर्ड के सदस्य भी रहे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. एके छाबड़ा ने कार्यक्रम में भाग लेने वालों का आभार जताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	28.5.21	4	6-8

खाद्यान उत्पादन में योगदान देने के लिए डॉ. रामधन को किया याद, वीसी बोले

डॉ. रामधन की तैयार 370 किस्म की बदौलत देश बना बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए याद किया जाता है। हरियाणा पंजाब में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन उत्पादकता में उनकी अनूठी उपलब्धियां रही। उनकी ओर से स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कुलपति ने कहा कि डॉ. रामधन द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। उन्होंने गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि वे 20 अप्रैल 1977 को इस संसार को अलविदा कह गए लेकिन सबको जिंदा रहने के लिए अथाह अनाज भंडार दे गए। रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. एके छाबड़ा ने उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। मंच का संचालन सहायक अधिष्ठाता डॉ. सुरेंद्र कुमार पाहुजा ने किया।

हकृवि के कुलपति प्रो.बीआर कांबोज व अन्य पुस्तक का विमोचन।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	28.5.21	3	6-8

खाद्यान उत्पादन में योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

कार्यक्रम के दौरान स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बीआर काम्बोज एवं अन्य। ● पीआरओ

जागरण संवाददाता, हिसार: स्वर्गीय राव बहादुर डा. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति समय के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि विज्ञानियों स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

विज्ञानियों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान: मुख्यातिथि ने डा. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि विज्ञानियों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए।

दुनियाभर में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में है पहचान : कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रेजंटेटिव व बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत कराया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28.05.2021	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 मई (राजकुमार) : स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर.काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

हिसार : कार्यक्रम के दौरान स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज एवं अन्य।

वैज्ञानिकों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान : मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

दुनियाभर में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में है पहचान : डॉ. अरूण जोशी

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रजेंटेटिव व बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत करवाया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. ए.के. छाबड़ा ने कार्यक्रम के शुभारंभ पर सभी का स्वागत किया और उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। मंच का संचालन सहायक अधिष्ठाता डॉ. सुरेंद्र कुमार पाहुजा ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	27.05.2021	--	--

डॉ. रामधन सिंह ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई: कुलपति

हिसार, 27 मई (रिपोर्टर): स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनक वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दालों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश की खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़कर उनकी देखभाल करें और उनमें बदलते मौसम व जलवायु के अनुसार आने वाले हर बदलाव का बारीकी से अध्ययन करें। पौधों में जान होती है, लेकिन वे इंसानों की तरह बोल नहीं सकते। इसलिए भावनात्मक रूप से जुड़कर उनकी हर गतिविधि पर नजर रखते हुए नई किस्मों की ईजाद करें। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रेजेंटेटिव व बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरुण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत कराया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि डॉ. रामधन सिंह कृषि अनुसंधान एवं विकास की कई समितियों के सदस्य रहे। इसके अलावा वह विश्वविद्यालय प्रबंधक बोर्ड के सदस्य भी रहे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. एके छाबड़ा ने उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। मंच संचालन सहायक अधिष्ठाता डॉ. सुशील कुमार पहुजा ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	27.05.2021	--	--

हकृवि में सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में कार्यक्रम का आयोजन

देश में हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में है स्व. रामधन सिंह की पहचान : प्रो. काम्बोज

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	27.05.2021	--	--

खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहे। वे ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक है। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया।

उन्होंने बताया कि देसी गेहूं की किस्म जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, सी-306 के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं। इसके अलावा संसार में मशहूर बासमती चावल 370 और झोना- 349 भी उनकी ही देन है। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह की दुनियाभर में बेहतरीन विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करने वाले वैज्ञानिक के रूप में अलग पहचान है। उन्होंने भविष्य में आने वाली विभिन्न चुनौतियों के बारे में अवगत करवाते हुए वैज्ञानिकों से सचेत रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर डॉ. एस.के. सहरावत, अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिंदुस्तान समाचार	27.05.2021	--	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	28.05.2021	--	--

खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार।स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति आंदोलन के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है।

ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर.काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिसके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

कार्यक्रम के दौरान स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज एवं अन्य।

वैज्ञानिकों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान

मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्रोत के रूप में [illegible] विश्वविद्यालय में रामधन सिंह [illegible] की स्थापना भी की गई है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़कर उनकी देखभाल करें और उनमें बदलते मौसम व जलवायु के अनुसार आने वाले हर बदलाव का बारीकी से अध्ययन करें। पौधों में जान होती है, लेकिन वे इंसानों की तरह बोल नहीं सकते। इसलिए भावनात्मक रूप से जुड़कर उनकी हर परिस्थिति पर नजर रखते हुए नई किस्मों को ईजाद करें। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

दुनियाभर में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में है पहचान : डॉ. अरुण जोशी

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि [illegible] बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के [illegible] डॉ. अरुण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि [illegible] बी-326 के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं। इसके अलावा [illegible] में मशहूर बासमती चावल 370 और [illegible] भी उनकी ही देन है। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह की दुनियाभर में बेहतरीन विभिन्न फसलों की किस्में विकसित करने वाले वैज्ञानिक के रूप में अलग पहचान है। उन्होंने भविष्य में आने वाली विभिन्न चुनौतियों के बारे में अवगत करवाते हुए वैज्ञानिकों से एकजुट होने का आह्वान किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि वे 30 अप्रैल 1977 को इस संसार को अलविदा कह गए [illegible] के लिए [illegible]। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह कृषि अनुसंधान एवं विकास की कई समितियों के सदस्य रहे। इसके अलावा वह विश्वविद्यालय प्रबंधन बोर्ड के सदस्य भी रहे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. ए.के. छाबड़ा ने कार्यक्रम के शुभारंभ पर सभी का स्वागत किया और उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	27.05.2021	--	--

खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूज: हिसार, 27 मई। स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर.काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित

एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनक वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

वैज्ञानिकों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान : मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है।

उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़?र उनकी देखभाल करें और उन्हें बदलते मौसम व जलवायु के अनुसार आने वाले हर बदलाव का बारीकी से अध्ययन करें। पौधों में जान होती है, लेकिन वे इंसानों की तरह बोल नहीं सकते। इसलिए भावनात्मक रूप से जुड़?र उनकी हर गतिविधि पर नजर रखते हुए नई किस्मों को ईजाद करें। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार न्यूज	28.05.2021	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार: स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर.काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध

कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान उत्पादन में

देश में हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में है पहचान

अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

वैज्ञानिकों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान

मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्त्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	27.05.2021	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. बीआर काम्बोज

विवि के वैज्ञानिकों की लिखित पुस्तक का किया विमोचन

समस्त हरियाणा न्यूज

[illegible]

[illegible]

पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान

[illegible]

दुनिया में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में है पहचान : डॉ. अरूण जोशी

[illegible]